



Mr.

07 Feb 2004

04:25 AM

Patiala

Model: All-Dosha-Report

Order No: 121719501

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 6-07/02/2004  
दिन \_\_\_\_\_: शुक्र-शनिवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 04:25:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 53:00:33 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Patiala  
राज्य \_\_\_\_\_: Punjab  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 30:19:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 76:24:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:24:24 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 04:00:36 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:14:03 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 13:06:17 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 07:12:46 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:04:27 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 10:51:41 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: शिशिर  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 23:34:45 मकर  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 07:49:28 धनु

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: धनु - गुरु  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: सिंह - सूर्य  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: मघा - 1  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: केतु  
योग \_\_\_\_\_: शोभन  
करण \_\_\_\_\_: कौलव  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: मूषक  
नाड़ी \_\_\_\_\_: अन्त्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: क्षत्रिय  
वश्य \_\_\_\_\_: वनचर  
वर्ग \_\_\_\_\_: मूषक  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: अग्नि  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: मा-माणिक  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: रजत - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: कुम्भ

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1925	माघ	18
पंजाबी	संवत : 2060	माघ	25
बंगाली	सन् : 1410	माघ	24
तमिल	संवत : 2060	थई	24
केरल	कोल्लम : 1179	मकरम	24
नेपाली	संवत : 2060	माघ	25
चैत्रादि	संवत : 2060	फाल्गुन	शुक्ल 1
कार्तिकादि	संवत : 2060	माघ	शुक्ल 1

### पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 15  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:16:56  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 1  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : आश्लेषा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 27:19:35 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : मघा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : सौभाग्य  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 26:59:00 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : शोभन  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : बव  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:16:56 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : कौलव  
भयात \_\_\_\_\_ : 02:43:34  
भभोग \_\_\_\_\_ : 61:08:50  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : केतु 6 वर्ष 8 मा 8 दि

### घात चक्र

मास \_\_\_\_\_ : ज्येष्ठ  
तिथि \_\_\_\_\_ : 3-8-13  
दिन \_\_\_\_\_ : शनिवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : मूल  
योग \_\_\_\_\_ : धृति  
करण \_\_\_\_\_ : बव  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : मार्जार  
लग्न \_\_\_\_\_ : मीन  
सूर्य \_\_\_\_\_ : धनु  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : मकर  
मंगल \_\_\_\_\_ : मकर  
बुध \_\_\_\_\_ : तुला  
गुरु \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मीन  
शनि \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
राहु \_\_\_\_\_ : मेष

**Pt Rupinder vashishth**

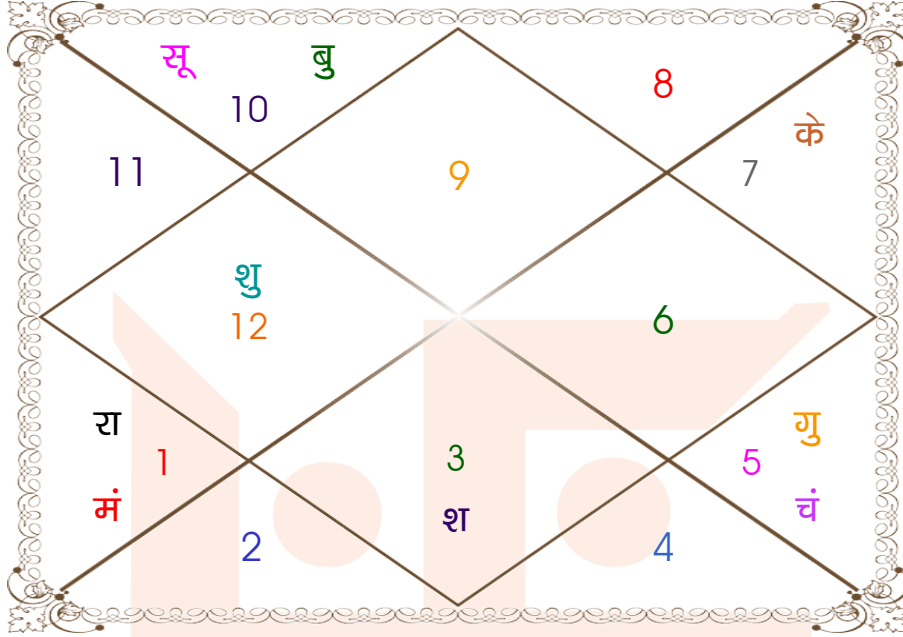
Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

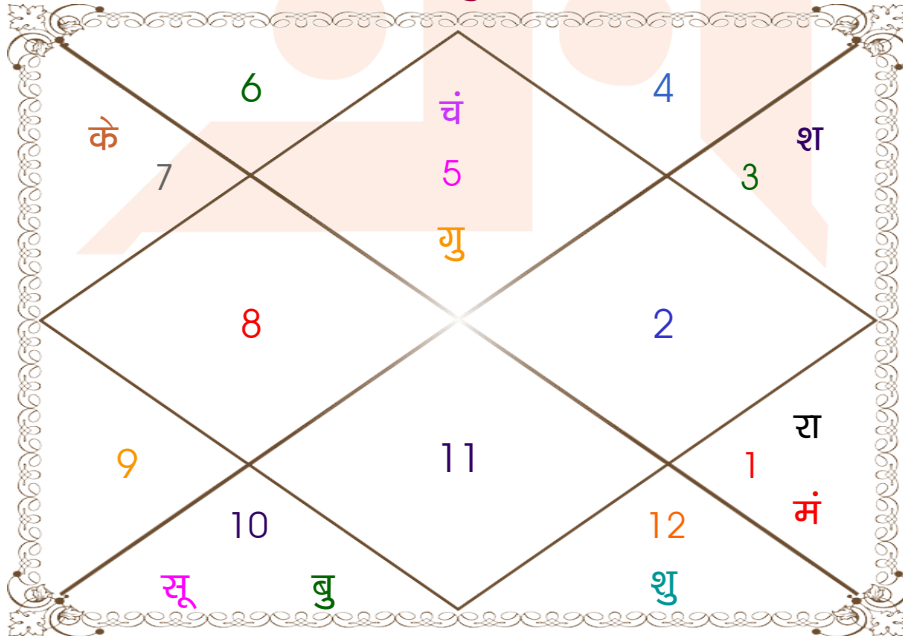
rupendersharma1971@gmail.com

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुण्डली

शु	रा मं		श
बु सू			गु चं
ल		के	

### लग्न कुण्डली

	रा मं	शु
श		
		बु सू
चं गु	के	ल

विंशोत्तरी  
केतु 6वर्ष 8मा 8दि  
केतु

07/02/2004

18/10/2123

केतु	16/10/2010
शुक्र	16/10/2030
सूर्य	16/10/2036
चन्द्र	16/10/2046
मंगल	16/10/2053
राहु	17/10/2071
गुरु	17/10/2087
शनि	17/10/2106
बुध	18/10/2123

योगिनी  
भद्रिका 4वर्ष 9मा 10दि  
संकटा

17/11/2021

17/11/2029

संकटा	29/08/2023
मंगला	18/11/2023
पिंगला	28/04/2024
धान्या	28/12/2024
भ्रामरी	17/11/2025
भद्रिका	28/12/2026
उल्का	28/04/2028
सिद्धा	17/11/2029

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

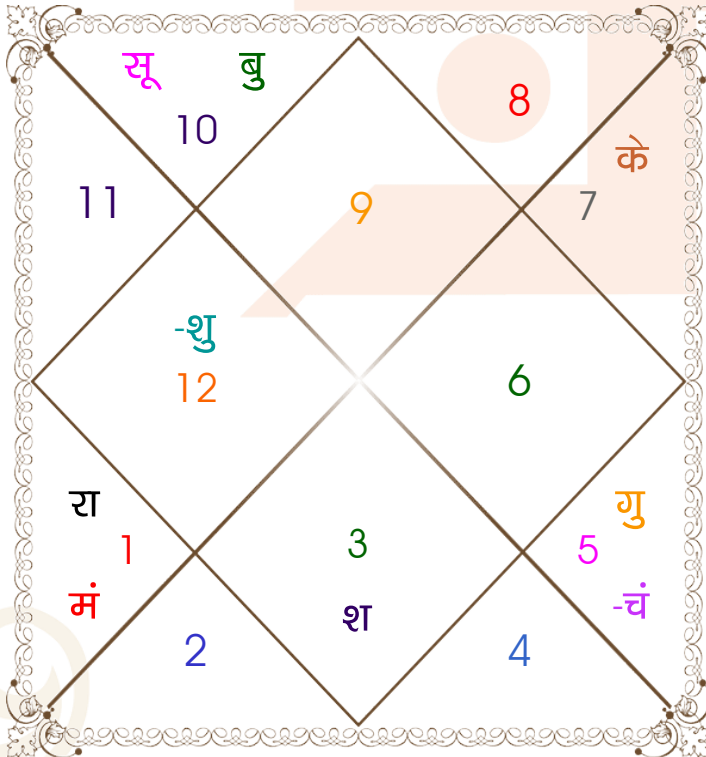
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	07:49:28	334:26:09	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	---
सूर्य			मक	23:34:45	01:00:47	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	मंगल	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	00:35:23	12:59:01	मघा	1	10	सूर्य	केतु	केतु	मित्र राशि
मंगल			मेष	08:20:09	00:38:10	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	मूलत्रिकोण
बुध			मक	05:44:59	01:30:01	उत्तराषाढा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	सम राशि
गुरु	व		सिंह	23:12:28	00:05:58	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	मित्र राशि
शुक्र			मीन	04:02:46	01:11:06	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	उच्च राशि
शनि	व		मिथु	13:10:40	00:03:08	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	बुध	मित्र राशि
राहु	व		मेष	21:38:35	00:13:42	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	गुरु	शत्रु राशि
केतु	व		तुला	21:38:35	00:13:42	विशाखा	1	16	शुक्र	गुरु	गुरु	सम राशि
हर्ष			कुंभ	08:00:30	00:03:22	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	राहु	---
नेप			मक	19:07:46	00:02:16	श्रवण	3	22	शनि	चंद्र	बुध	---
प्लूटो			वृश्चि	27:44:28	00:01:28	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	---
दशम भाव			कन्या	24:03:29	--	चित्रा	--	14	बुध	मंगल	मंगल	--

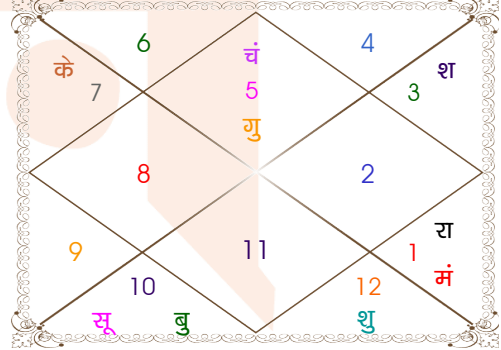
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:54:41

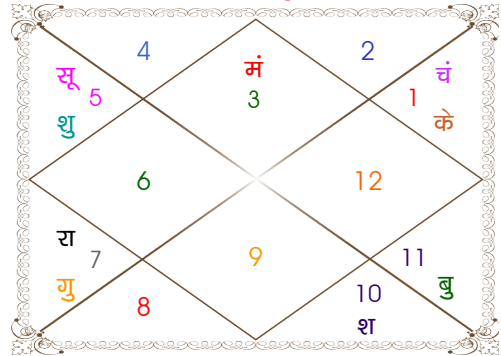
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



Pt Rupinder vashishth

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 25:31:48	धनु 07:49:28
2	धनु 25:31:48	मकर 13:14:08
3	कुम्भ 00:56:28	कुम्भ 18:38:49
4	मीन 06:21:09	मीन 24:03:29
5	मेष 06:21:09	मेष 18:38:49
6	वृष 00:56:28	वृष 13:14:08
7	वृष 25:31:48	मिथुन 07:49:28
8	मिथुन 25:31:48	कर्क 13:14:08
9	सिंह 00:56:28	सिंह 18:38:49
10	कन्या 06:21:09	कन्या 24:03:29
11	तुला 06:21:09	तुला 18:38:49
12	वृश्चिक 00:56:28	वृश्चिक 13:14:08

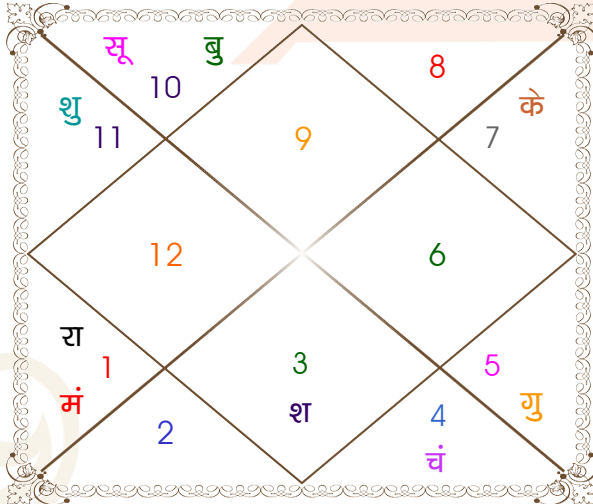
### निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	07:49:28
2	मकर	12:41:36
3	कुम्भ	20:10:46
4	मीन	24:03:29
5	मेष	21:47:30
6	वृष	15:18:54
7	मिथुन	07:49:28
8	कर्क	12:41:36
9	सिंह	20:10:46
10	कन्या	24:03:29
11	तुला	21:47:30
12	वृश्चिक	15:18:54

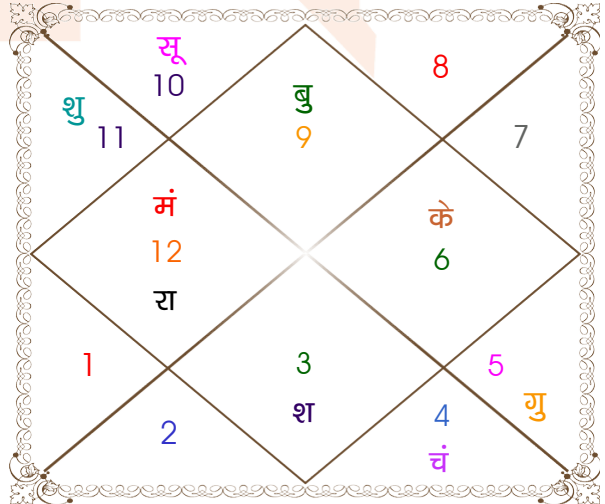
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

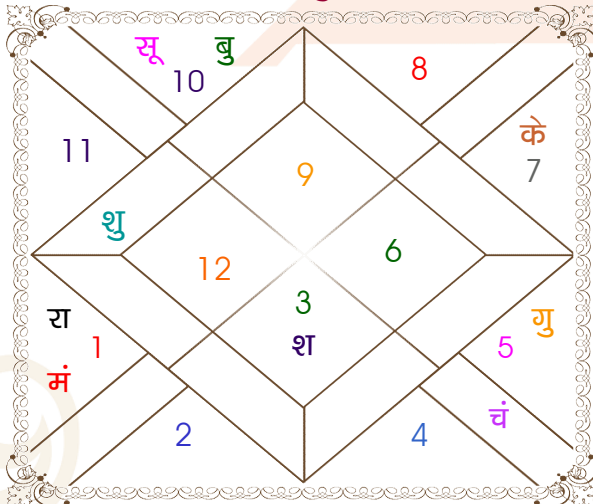
## कारक, अवस्था, रश्मि

ग्रह	----- कारक -----			----- अवस्था -----			ग्रह बल
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	
सूर्य	आत्मा	पितृ	कुमार	खल	प्रकाश	2.30	26 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	बाल	मुदित	आगम	4.62	9 %
मंगल	मातृ	भातृ	कुमार	स्वस्थ	भोजन	6.09	73 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	मृत	शान्त	निद्रा	0.96	33 %
गुरु	अमात्य	धन	वृद्ध	मुदित	शयन	5.13	56 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	मृत	दीप्त	निद्रा	20.94	51 %
शनि	भातृ	आयु	युवा	मुदित	निद्रा	1.48	50 %
राहु	---	ज्ञान	वृद्ध	खल	प्रकाश	0.00	75 %
केतु	---	मोक्ष	वृद्ध	निपीदित	निद्रा	0.00	75 %
कुल						41.52	

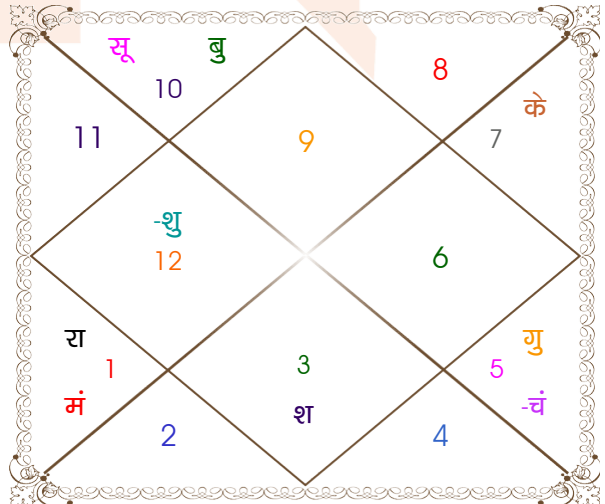
### तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा

### भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 8 मास 8 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
07/02/2004	16/10/2010	16/10/2030	16/10/2036	16/10/2046
16/10/2010	16/10/2030	16/10/2036	16/10/2046	16/10/2053
केतु 14/03/2004	शुक्र 15/02/2014	सूर्य 03/02/2031	चंद्र 16/08/2037	मंगल 15/03/2047
शुक्र 14/05/2005	सूर्य 15/02/2015	चंद्र 05/08/2031	मंगल 17/03/2038	राहु 01/04/2048
सूर्य 19/09/2005	चंद्र 16/10/2016	मंगल 10/12/2031	राहु 16/09/2039	गुरु 08/03/2049
चंद्र 20/04/2006	मंगल 16/12/2017	राहु 03/11/2032	गुरु 15/01/2041	शनि 17/04/2050
मंगल 16/09/2006	राहु 16/12/2020	गुरु 22/08/2033	शनि 17/08/2042	बुध 14/04/2051
राहु 04/10/2007	गुरु 17/08/2023	शनि 04/08/2034	बुध 16/01/2044	केतु 10/09/2051
गुरु 09/09/2008	शनि 16/10/2026	बुध 11/06/2035	केतु 16/08/2044	शुक्र 09/11/2052
शनि 19/10/2009	बुध 16/08/2029	केतु 17/10/2035	शुक्र 17/04/2046	सूर्य 17/03/2053
बुध 16/10/2010	केतु 16/10/2030	शुक्र 16/10/2036	सूर्य 16/10/2046	चंद्र 16/10/2053

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
16/10/2053	17/10/2071	17/10/2087	17/10/2106	18/10/2123
17/10/2071	17/10/2087	17/10/2106	18/10/2123	00/00/0000
राहु 28/06/2056	गुरु 04/12/2073	शनि 19/10/2090	बुध 15/03/2109	केतु 08/02/2124
गुरु 22/11/2058	शनि 16/06/2076	बुध 29/06/2093	केतु 12/03/2110	00/00/0000
शनि 28/09/2061	बुध 22/09/2078	केतु 07/08/2094	शुक्र 10/01/2113	00/00/0000
बुध 16/04/2064	केतु 29/08/2079	शुक्र 07/10/2097	सूर्य 17/11/2113	00/00/0000
केतु 05/05/2065	शुक्र 29/04/2082	सूर्य 19/09/2098	चंद्र 18/04/2115	00/00/0000
शुक्र 05/05/2068	सूर्य 15/02/2083	चंद्र 20/04/2100	मंगल 14/04/2116	00/00/0000
सूर्य 29/03/2069	चंद्र 16/06/2084	मंगल 30/05/2101	राहु 02/11/2118	00/00/0000
चंद्र 28/09/2070	मंगल 23/05/2085	राहु 05/04/2104	गुरु 06/02/2121	00/00/0000
मंगल 17/10/2071	राहु 17/10/2087	गुरु 17/10/2106	शनि 18/10/2123	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 6 वर्ष 8 मा 8 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

<b>शुक्र - शनि</b> 17/08/2023 16/10/2026	<b>शुक्र - बुध</b> 16/10/2026 16/08/2029	<b>शुक्र - केतु</b> 16/08/2029 16/10/2030	<b>सूर्य - सूर्य</b> 16/10/2030 03/02/2031	<b>सूर्य - चंद्र</b> 03/02/2031 05/08/2031
शनि 16/02/2024 बुध 29/07/2024 केतु 04/10/2024 शुक्र 15/04/2025 सूर्य 12/06/2025 चंद्र 16/09/2025 मंगल 23/11/2025 राहु 15/05/2026 गुरु 16/10/2026	बुध 12/03/2027 केतु 11/05/2027 शुक्र 31/10/2027 सूर्य 22/12/2027 चंद्र 17/03/2028 मंगल 16/05/2028 राहु 18/10/2028 गुरु 05/03/2029 शनि 16/08/2029	केतु 10/09/2029 शुक्र 20/11/2029 सूर्य 11/12/2029 चंद्र 16/01/2030 मंगल 10/02/2030 राहु 15/04/2030 गुरु 11/06/2030 शनि 17/08/2030 बुध 16/10/2030	सूर्य 22/10/2030 चंद्र 31/10/2030 मंगल 06/11/2030 राहु 23/11/2030 गुरु 07/12/2030 शनि 25/12/2030 बुध 09/01/2031 केतु 16/01/2031 शुक्र 03/02/2031	चंद्र 18/02/2031 मंगल 01/03/2031 राहु 28/03/2031 गुरु 22/04/2031 शनि 20/05/2031 बुध 15/06/2031 केतु 26/06/2031 शुक्र 26/07/2031 सूर्य 05/08/2031
<b>सूर्य - मंगल</b> 05/08/2031 10/12/2031	<b>सूर्य - राहु</b> 10/12/2031 03/11/2032	<b>सूर्य - गुरु</b> 03/11/2032 22/08/2033	<b>सूर्य - शनि</b> 22/08/2033 04/08/2034	<b>सूर्य - बुध</b> 04/08/2034 11/06/2035
मंगल 12/08/2031 राहु 31/08/2031 गुरु 17/09/2031 शनि 07/10/2031 बुध 26/10/2031 केतु 02/11/2031 शुक्र 23/11/2031 सूर्य 30/11/2031 चंद्र 10/12/2031	राहु 29/01/2032 गुरु 13/03/2032 शनि 04/05/2032 बुध 19/06/2032 केतु 08/07/2032 शुक्र 01/09/2032 सूर्य 18/09/2032 चंद्र 15/10/2032 मंगल 03/11/2032	गुरु 12/12/2032 शनि 27/01/2033 बुध 10/03/2033 केतु 27/03/2033 शुक्र 15/05/2033 सूर्य 29/05/2033 चंद्र 22/06/2033 मंगल 10/07/2033 राहु 22/08/2033	शनि 16/10/2033 बुध 04/12/2033 केतु 25/12/2033 शुक्र 21/02/2034 सूर्य 10/03/2034 चंद्र 08/04/2034 मंगल 28/04/2034 राहु 19/06/2034 गुरु 04/08/2034	बुध 17/09/2034 केतु 05/10/2034 शुक्र 26/11/2034 सूर्य 12/12/2034 चंद्र 07/01/2035 मंगल 25/01/2035 राहु 12/03/2035 गुरु 23/04/2035 शनि 11/06/2035
<b>सूर्य - केतु</b> 11/06/2035 17/10/2035	<b>सूर्य - शुक्र</b> 17/10/2035 16/10/2036	<b>चंद्र - चंद्र</b> 16/10/2036 16/08/2037	<b>चंद्र - मंगल</b> 16/08/2037 17/03/2038	<b>चंद्र - राहु</b> 17/03/2038 16/09/2039
केतु 18/06/2035 शुक्र 10/07/2035 सूर्य 16/07/2035 चंद्र 27/07/2035 मंगल 03/08/2035 राहु 22/08/2035 गुरु 08/09/2035 शनि 29/09/2035 बुध 17/10/2035	शुक्र 17/12/2035 सूर्य 04/01/2036 चंद्र 03/02/2036 मंगल 25/02/2036 राहु 19/04/2036 गुरु 07/06/2036 शनि 04/08/2036 बुध 25/09/2036 केतु 16/10/2036	चंद्र 10/11/2036 मंगल 28/11/2036 राहु 13/01/2037 गुरु 22/02/2037 शनि 11/04/2037 बुध 25/05/2037 केतु 11/06/2037 शुक्र 01/08/2037 सूर्य 16/08/2037	मंगल 29/08/2037 राहु 30/09/2037 गुरु 28/10/2037 शनि 01/12/2037 बुध 31/12/2037 केतु 12/01/2038 शुक्र 17/02/2038 सूर्य 28/02/2038 चंद्र 17/03/2038	राहु 07/06/2038 गुरु 20/08/2038 शनि 14/11/2038 बुध 31/01/2039 केतु 04/03/2039 शुक्र 03/06/2039 सूर्य 01/07/2039 चंद्र 15/08/2039 मंगल 16/09/2039

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु	चंद्र - शनि	चंद्र - बुध	चंद्र - केतु	चंद्र - शुक्र
16/09/2039	15/01/2041	17/08/2042	16/01/2044	16/08/2044
15/01/2041	17/08/2042	16/01/2044	16/08/2044	17/04/2046
गुरु 20/11/2039	शनि 17/04/2041	बुध 29/10/2042	केतु 28/01/2044	शुक्र 25/11/2044
शनि 05/02/2040	बुध 08/07/2041	केतु 28/11/2042	शुक्र 04/03/2044	सूर्य 26/12/2044
बुध 14/04/2040	केतु 10/08/2041	शुक्र 22/02/2043	सूर्य 15/03/2044	चंद्र 15/02/2045
केतु 13/05/2040	शुक्र 15/11/2041	सूर्य 20/03/2043	चंद्र 01/04/2044	मंगल 22/03/2045
शुक्र 02/08/2040	सूर्य 14/12/2041	चंद्र 02/05/2043	मंगल 14/04/2044	राहु 21/06/2045
सूर्य 26/08/2040	चंद्र 31/01/2042	मंगल 01/06/2043	राहु 16/05/2044	गुरु 11/09/2045
चंद्र 06/10/2040	मंगल 06/03/2042	राहु 18/08/2043	गुरु 13/06/2044	शनि 16/12/2045
मंगल 03/11/2040	राहु 31/05/2042	गुरु 26/10/2043	शनि 17/07/2044	बुध 12/03/2046
राहु 15/01/2041	गुरु 17/08/2042	शनि 16/01/2044	बुध 16/08/2044	केतु 17/04/2046

चंद्र - सूर्य	मंगल - मंगल	मंगल - राहु	मंगल - गुरु	मंगल - शनि
17/04/2046	16/10/2046	15/03/2047	01/04/2048	08/03/2049
16/10/2046	15/03/2047	01/04/2048	08/03/2049	17/04/2050
सूर्य 26/04/2046	मंगल 25/10/2046	राहु 11/05/2047	गुरु 16/05/2048	शनि 11/05/2049
चंद्र 11/05/2046	राहु 16/11/2046	गुरु 01/07/2047	शनि 09/07/2048	बुध 07/07/2049
मंगल 22/05/2046	गुरु 06/12/2046	शनि 31/08/2047	बुध 27/08/2048	केतु 31/07/2049
राहु 18/06/2046	शनि 30/12/2046	बुध 24/10/2047	केतु 16/09/2048	शुक्र 06/10/2049
गुरु 12/07/2046	बुध 20/01/2047	केतु 16/11/2047	शुक्र 11/11/2048	सूर्य 27/10/2049
शनि 10/08/2046	केतु 29/01/2047	शुक्र 19/01/2048	सूर्य 29/11/2048	चंद्र 29/11/2049
बुध 05/09/2046	शुक्र 23/02/2047	सूर्य 07/02/2048	चंद्र 27/12/2048	मंगल 23/12/2049
केतु 16/09/2046	सूर्य 02/03/2047	चंद्र 10/03/2048	मंगल 16/01/2049	राहु 22/02/2050
शुक्र 16/10/2046	चंद्र 15/03/2047	मंगल 01/04/2048	राहु 08/03/2049	गुरु 17/04/2050

मंगल - बुध	मंगल - केतु	मंगल - शुक्र	मंगल - सूर्य	मंगल - चंद्र
17/04/2050	14/04/2051	10/09/2051	09/11/2052	17/03/2053
14/04/2051	10/09/2051	09/11/2052	17/03/2053	16/10/2053
बुध 07/06/2050	केतु 23/04/2051	शुक्र 20/11/2051	सूर्य 16/11/2052	चंद्र 04/04/2053
केतु 28/06/2050	शुक्र 18/05/2051	सूर्य 11/12/2051	चंद्र 26/11/2052	मंगल 16/04/2053
शुक्र 28/08/2050	सूर्य 25/05/2051	चंद्र 16/01/2052	मंगल 04/12/2052	राहु 18/05/2053
सूर्य 15/09/2050	चंद्र 06/06/2051	मंगल 10/02/2052	राहु 23/12/2052	गुरु 16/06/2053
चंद्र 15/10/2050	मंगल 15/06/2051	राहु 14/04/2052	गुरु 09/01/2053	शनि 19/07/2053
मंगल 05/11/2050	राहु 07/07/2051	गुरु 10/06/2052	शनि 29/01/2053	बुध 19/08/2053
राहु 29/12/2050	गुरु 27/07/2051	शनि 16/08/2052	बुध 16/02/2053	केतु 31/08/2053
गुरु 16/02/2051	शनि 20/08/2051	बुध 15/10/2052	केतु 24/02/2053	शुक्र 05/10/2053
शनि 14/04/2051	बुध 10/09/2051	केतु 09/11/2052	शुक्र 17/03/2053	सूर्य 16/10/2053

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	6
मित्र अंक	2, 3, 6, 7
शत्रु अंक	4, 5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

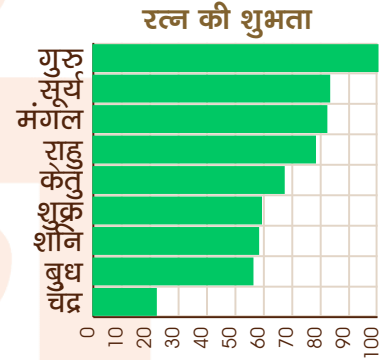
rupendersharma1971@gmail.com

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	भाग्योदय, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	83%	धन, भाग्योदय
मूंगा	मंगल	82%	सन्तति सुख, कम खर्च
गोमेद	राहु	78%	सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	67%	धनार्जन, सुख
हीरा	शुक्र	59%	सुख, शत्रु व रोग मुक्ति, धनार्जन
नीलम	शनि	58%	दम्पति, धन, पराक्रम
पन्ना	बुध	56%	धन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	22%	नेष्ट भाग्य, दुर्घटना



### दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	16/10/2010	70%	0%	88%	56%	100%	66%	41%	66%	80%
शुक्र	16/10/2030	70%	0%	82%	62%	100%	72%	64%	84%	73%
सूर्य	16/10/2036	95%	34%	88%	56%	100%	44%	41%	66%	55%
चंद्र	16/10/2046	89%	47%	82%	62%	100%	59%	58%	66%	55%
मंगल	16/10/2053	89%	34%	94%	38%	100%	59%	58%	66%	73%
राहु	17/10/2071	70%	0%	69%	56%	100%	66%	64%	91%	55%
गुरु	17/10/2087	89%	34%	88%	38%	100%	44%	58%	78%	67%
शनि	17/10/2106	70%	0%	69%	62%	100%	66%	70%	84%	55%
बुध	18/10/2123	89%	0%	82%	69%	100%	66%	58%	78%	67%

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पडता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पडता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

### द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

### तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076
अष्टम स्थानस्थ ढैया	20/03/2084-21/05/2086	21/05/2086-08/02/2087	-----

### शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	दुर्घटना
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	बदनामी
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	व्यावसाय
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	अशुभ	व्यय
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सुख

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- चन्द्र नवम् भाव में स्थित है तथा उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।
- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र, मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें। विद्यालय में पुस्तकों का दान करें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली धनु लग्न की हैं। आदर्शवादी होने के कारण आप उत्साही रहते हैं। छल-कपट की भावना आपमें नहीं होती और कभी इनके साथ ऐसा होने पर ये लोग काफी समय तक उस बारे में सोचते रहते हैं, तो इन्हें अपनी इस आदत का बदलने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में आपके धन संयम/प्रबंधन (वर्तमान में वित्तीय प्रबंधक या सलाहकार) की कला से ओतप्रोत बने रह सकते हैं। आपमें दूरदर्शिता का गुण भी देखा जाता है जिस कारण इनके कार्यों में हानि की मात्रा में भी कमी आती है।

ईश्वरप्रिय होने के कारण गलत कार्यों से दूरी बनाये रखते हैं और कभी-कभी चिन्तित भी हो जाते हैं। आप हमेशा प्रसन्नचित्त अवस्था में रहने का प्रयास करते हैं। आप अपनी

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

बातों में गंभीरता लिये होते हैं। धनी, सम्मानित और समाज में प्रतिष्ठित होने की योग्यता रखते हैं। आप अच्छे सलाहकार साबित हो सकते हैं, परन्तु बिना मांगे किसी को सलाह देने से बचें अन्यथा आलोचना के पात्र बन सकते हैं। आपकी वित्त प्रबंधन / सलाह अच्छी होती है।

षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव - भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ठ भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

कुंडली में षष्ठ भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता है। धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग लग्न से आठवां भाव अष्टम कहलाता है। इस भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती है। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते हैं। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

आपके लग्न के लिए शुक्र षष्ठेश व एकादशेश है, आप की संतान विद्रोही हो सकती है, जीवन साथी से अनबन, मन में खिन्नता, व्यभिचारी तथा बन्धु विरोधी हो सकते हैं।

चन्द्र अष्टमेश हैं। आपके धनु लग्न में अष्टमेश चन्द्र है, चन्द्र की यह स्थिति आपको बचपन में कष्ट, पानी के दुष्प्रभाव से होने वाले रोगों के प्रभाव में शीघ्र आने की संभावना, यह योग धन व सम्मान की हानि का कारण बनता है।

मंगल द्वादशेश तथा पंचमेश होते हैं। व्यय अधिक, विद्या व बुद्धि से अल्प लाभ, संतान से न्यून सुख, भाई-बहनों से सामान्य सुख, सामान्य पराक्रमी, शत्रु से संघर्ष में सफल, जीवन साथी से कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 2, 3, 6 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए।  
क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए  
आवश्यक हैं।



## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया धनु लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं शांत स्वभाव के व्यक्ति होते हैं परन्तु यदाकदा ये अभिमान के भाव का प्रदर्शन करते हैं। धार्मिकता की भावना इनमें विद्यमान रहती है तथा अत्यंत ही बुद्धिमता से सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करते हैं तथा उनमें सफलता भी प्राप्त करते हैं फलतः जीवन में धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में ये समर्थ रहते हैं। आदर्शवाद एवं अध्यात्मवाद के मध्य प्रवृत्त रहकर ये भौतिक सुखों का भी उपभोग करते हैं। अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरों पर विश्वास कम ही करते हैं। दानशीलता की भी इनकी प्रवृत्ति होती है तथा सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा यश की प्राप्ति होती रहती है। धर्म, राजनीति, कानून तथा गणित या ज्योतिष आदि में इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं। भौतिक प्रलोभनों की अपेक्षा इन्हें प्रेम से आसानी से वश में किया जा सकता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली पुरुष होंगे तथा परिश्रम एवं बुद्धिमतापूर्वक अपने महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे अतः विभिन्न विषयों का आपको अच्छा ज्ञान होगा। कला के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी तथा जीवन में निहित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करेंगे। साथ ही अन्य जनों से कभी भी द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रखेंगे। शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों से भी आपका उदारतापूर्वक व्यवहार रहेगा। इसके अतिरिक्त अपनी व्यवहार कुशलता, बुद्धिमता तथा धैर्य से कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे तथा सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में लग्नेश बृहस्पति की राशि के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा वैदिक धार्मिक या ज्योतिष सम्बन्धी विषयों का अध्ययन करेंगे तथा इस क्षेत्र में आप परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि तथा यश अर्जित करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा सुखैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। पुत्र संतति से आप युक्त होंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग मिलेगा। साथ ही पिता के प्रति भी आपके मन में पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी सेवा करने में तत्पर रहेंगे। इससे आपको आत्मसन्तुष्टि की अनुभूति होगी। परिवार की उन्नति एवं समृद्धि में आपका प्रमुख सहयोग रहेगा तथा समाजिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

आप आस्तिक विचारों के पुरुष होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन में निष्ठा रहेगी तथा श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही तीर्थयात्रा आदि के भी योग बनेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के मध्य आपकी लोकप्रियता रहेगी तथा उनसे पूर्ण सम्मान सहयोग तथा लाभ मिलता रहेगा। इस प्रकार आप स्वस्थ बुद्धिमान विद्वान पराक्रमी तथा धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा सर्व भौतिक सुखों को अर्जित करके सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप अन्य जनों से अपना वायदा पूरा नहीं करेंगे तथा अपना अधिकांश समय अनावश्यक वार्तालाप में ही व्यतीत करेंगे। आप इतनी बातूनी प्रकृति के व्यक्ति होंगे कि अन्य लोग आसानी से आप पर काबू नहीं पा सकते हैं। आपका स्वभाव आधुनिक विचारों से युक्त रहेगा तथा विनम्रता का भाव भी विद्यमान रहेगा। आपकी एक मुख्य विशेषता यह रहेगी कि आप किसी को भी अनावश्यक रूप से अपना मित्र नहीं बनाएंगे तथा अत्यंत ही सोच समझकर ही किसी से मित्रता करेंगे जब आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो जाएंगे।

आप आंतरिक मन से पारिवारिक जनों की पूर्ण चिंता करेंगे परन्तु प्रत्यक्ष में उपेक्षा के भाव को ही प्रदर्शित करेंगे। इससे कई बार पारिवारिक जनों के मध्य अनावश्यक मतभेद की भी संभावना रहेगी तथापि उनसे आपको पूर्ण सुख तथा सहयोग मिलता रहेगा तथा परिवार की खुशहाली के लिए आप सदैव प्रयत्न तथा परिश्रमशील रहेंगे। आप विभिन्न स्वादों के प्रिय रहेंगे तथा अवसरानुकूल इनका आस्वादन करते रहेंगे। वृद्धावस्था में आपको नेत्र संबन्धी कष्ट की भी संभावना रहेगी। इसके अतिरिक्त नौकरी या अन्य साधनों से आप इच्छित मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही विदेश भ्रमण आदि से भी लाभ की संभावना रहेगी। इस प्रकार वैभवशाली जीवन व्यतीत करने में आप समर्थ रहेंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में मीनराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा शुक्र भी अपनी उच्चराशि में होकर चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से जीवन में आपको सर्वप्रकार से सांसारिक एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्चस्तर होगा।

आप एक सौभाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा। विवाह के बाद पत्नी के प्रभाव या सहयोग से आपको प्रचुर मात्रा में चल एवं अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आप स्वपराक्रम योग्यता एवं बुद्धिमता से भी प्रचुर मात्रा में धन-सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशिष्ट लाभ के योग बनेंगे अतः अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति पर ही विशेष निवेश करें।

जीवन में आप उत्तम आवास से युक्त होंगे। आपका घर सुन्दर विस्तृत एवं आधुनिक सुख सुविधाओं एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होगा जिससे इसके आकर्षण में वृद्धि होगी। आपका घर किसी समृद्ध कालोनी में होगा एवं पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा उनसे संबंधों में भी मधुरता होगी। इसके अतिरिक्त उत्तम वाहन से भी आप युक्त होंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगे। इनकी संख्या एक से अधिक भी हो सकती है।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं आकर्षक व्यक्तित्व की महिला होंगी। उनके विचार आधुनिक होंगे एवं सुन्दरता की वह प्रिय होंगी। परिवार का वह ईमानदारी से पालन पोषण करेंगी तथा यत्नपूर्वक सभी को प्रसन्न रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समयानुसार आपको वे अपनी ओर से नैतिक, आर्थिक एवं अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपकी उन्नति में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका होगी। आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा सुख-दुःख में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इससे आपके परस्पर संबंधों में भी सामंजस्य बना रहेगा।

अध्ययन के प्रति आपकी प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक अर्जित करके परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करेंगे। आप स्नातक परीक्षा भी ससम्मान अच्छे अंको से पास करेंगे जिससे आपके उज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास के भाव की भी वृद्धि होगी तथा मित्रों एवं स्वजनों में आदर तथा प्रभाव बढ़ेगा। इसके अतिरिक्त आप किसी न्याय संबंधी पाठ्यक्रम में भी वांछित डिग्री या सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

यद्यपि शुक्र चतुर्थभाव में उच्चराशि में है तथापि कुंडली में षष्ठेश एवं एकादशेश होने के कारण मध्यावस्था के बाद आप अल्प मात्रा में रक्तचाप या हृदय संबंधी कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं परंतु यदि आप प्रारंभ से ही खान-पान का उचित ध्यान रखें तो ऐसी समस्याओं में कमी आएगी तथा आप सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। तथा राहु भी पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप एक सामान्य बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा बुद्धिमत्ता पूर्वक ही अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे परन्तु आप में दूर दर्शिता तथा शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता का अभाव होगा जिससे यदा-कदा आपके लाभ एवं सफलता के मार्ग अवरुद्ध हो सकते हैं। आपको कठिन एवं गंभीर समस्याओं के समाधान करने में भी काफी असुविधा की होगी जिससे कार्य सिद्धि में अनावश्यक विलम्ब की सम्भावना होगी। वैदिक साहित्य, धर्म एवं दर्शन के प्रति आपकी विशेष रुचि कम ही होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान साहित्य एवं पाश्चात्य भाषाध्ययन में आपकी पूर्ण रुचि होगी तथा परिश्रम पूर्वक इनके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे तथा इनके अध्ययन एवं ज्ञान से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भावास्थ राहु के प्रभाव से प्रेम प्रसंगों में भी आप रुचिशील होंगे तथा मनोरंजन एवं दिलबहलाव के लिए ऐसे संबंध को स्थापित करके आपको मानसिक सन्तुष्टि की प्राप्ति होगी लेकिन प्रेम के क्षेत्र में आपको मर्यादा एवं नैतिकता का विशेष ध्यान रखना चाहिए अन्यथा इससे आपको अनावश्यक समस्याओं का भी सामना करना पड़ सकता है एवं सामाजिक सम्मान भी प्रभावित होगा। अतः ऐसी स्थिति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

पंचमभाव में मंगल की राशि में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपको संतति प्राप्ति में विलम्ब तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु सन्तति प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति तेजस्वी पराक्रमी एवं उग्रस्वभाव की होगी तथा वे अपनी इच्छा के ही कार्यों को करना अधिक पसन्द करेंगे। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को करने में माता पिता की सलाह एवं सहयोग भी कम ही लेंगे तथा यदा-कदा उनकी आज्ञा का उल्लंघन भी कर सकते हैं। लेकिन इससे आपको चिन्तित नहीं होना चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से कार्य करने देना चाहिए। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा एवं सम्बन्धों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चों से आपको विशेष सेवा भाव की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए तथा ऐसे समय के लिए यथोचित मात्रा में धन संग्रह करके रखना चाहिए जिससे आप अनावश्यक समस्याओं से सुरक्षित रहेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपके बच्चों की उन्नति सामान्य होगी तथा परिश्रम पूर्वक ही वे वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। यद्यपि अपनी ओर से आप उनके लिए किसी भी प्रकार की कमी नहीं करेंगे तथा अच्छी से अच्छी संस्था में उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करेंगे। लेकिन वे व्यवहार कुशल होंगे तथा अपने इन गुणों से जीवन में उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर होंगे। इसके अतिरिक्त तेजस्वी प्रवृत्ति के कारण यदा-कदा अन्य सामाजिक जनों से उनका विवाद आदि भी हो सकता है जिससे आपको अतिरिक्त परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इस प्रकार बच्चों का सुख आपके लिए सामान्य ही होगा।

## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा शनि भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया मिथुन राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील विनम्र कला एवं हास्य प्रिय होता है लेकिन नैसर्गिक क्रूर ग्रह शनि के प्रभाव से उसमें उग्रता साहस एवं पराक्रम का भाव भी रहता है तथा यदा कदा स्वार्थ वश अपने कर्तव्यों की भी उपेक्षा करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी परन्तु यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। अपने सांसारिक कार्यों को वह साहस तथा पराक्रम से सम्पन्न करेंगी परन्तु उनमें सफलताएं विलम्ब से ही प्राप्त होंगी। मिथुन राशि के प्रभाव से उनकी कला के प्रति रुचि होगी लेकिन शनि के प्रभाव से उनमें स्वार्थ का भाव उत्पन्न होगा जिससे वे परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करेंगी।

आपकी पत्नी किंचित श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होंगी एवं उनका कद भी उन्नत होगा शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी तथापि अन्य अंगों में सुडौलता तथा पुष्टता बनी रहेगी जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। मिथुन राशि के प्रभाव से कलात्मक वस्तुओं के प्रति उनके मन में प्रबल आकर्षण रहेगा एवं सुंदर वस्तुओं के संग्रह में भी प्रवृत्त होंगी। इसके अतिरिक्त भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा या शनि के प्रभाव से आप स्वेच्छा से अंतर्जातीय विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम की भावना रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहमति से पूर्ण करेंगी परन्तु शनि के प्रभाव से पत्नी की तेजस्विता की प्रवृत्ति से यदा कदा संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा। अतः ऐसे समय में संयम से कार्य लेना चाहिए।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वे सुदृढ़ रहेंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से संबंधों में औपचारिकता ही अधिक रहेगी एवं मधुरता के भाव में न्यूनता रहेगी लेकिन उनसे आपको अवसरानुकूल नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

आपकी पत्नी का सास ससुर के प्रति विशेष सेवा भाव कम होगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा कम ही करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके तेजस्वी स्वभाव से अप्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान एवं सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति शुभ नहीं होगी तथा इससे लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। अतः साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। कन्या राशि पृथ्वी तत्व प्रधान है अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र श्रमसाध्य होगा परन्तु बौद्धिक एवं मानसिक क्रियाओं की भी इसमें प्रबलता रहेगी आप स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के इच्छुक भी होंगे एवं परिश्रम पूर्वक कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे।

आजीविका की दृष्टि से आप लिपिकीय कार्य, लेखक, कवि, चित्रकार, वास्तुकार, ज्योतिषी, जिल्दसाज, शिक्षक, पुस्तक लेखक, यंत्र निर्माण कर्ता, संशोधक, अनुवादक, वकील, दूतकार्य, टेलीफोन आपरेटर या दूरभाष विभाग तथा राजनीति में किसी उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति के व्यक्तितगत सहायक के रूप में वांछित उन्नति सफलता एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। साथ ही उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा अतः आपको उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में ही उज्ज्वल भविष्य के लिए अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजेंसी दलाली पुस्तक विक्रय या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने कलात्मक वस्तुएं या वास्तुकला, वकालत, लेखाकार आदि के स्वतंत्र व्यवसाय एवं कार्यों से आप को इच्छित धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे अतः उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपना कार्य या व्यापार प्रारंभ करें।

जीवन में आपको मान प्रतिष्ठा तथा सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी समर्थ होंगे जिससे आपके समाज में प्रभाव में वृद्धि होगी एवं सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे। आप किसी सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानीय पदाधिकारी या सदस्य के रूप में मनोनीत होंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार अपनी अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

आपके पिता बुद्धिमान शिक्षित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में सभी लोग उन्हें यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण अपनत्व एवं वात्सल्य का भाव होगा तथा आपकी उच्चशिक्षा के लिए सदैव तत्पर होंगे। आपके कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता में उनका विशेष योगदान रहेगा तथा आप भी अपने परिश्रम ईमानदारी एवं योग्यता से पिता की प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके परस्पर संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक समानता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु तृतीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें द्वितीय भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु सप्तम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः अनुकूल रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। आपको कार्य क्षेत्र में मित्र, सहयोगी व जीवनसाथी का भी सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

02 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपके कार्य व्यवसाय में उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। अतः कोई नया काम प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती है। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके धनागम में निरन्तरता बना रहेगी। आप निष्ठा के साथ धनार्जन में लगे रहेंगे और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में जीवनसाथी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

गुरु के गोचर के बाद समय अच्छा नहीं रहेगा। गुरु एवं शनि दोनों ग्रहों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपके आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में आपको किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो आपका पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए ये समय उपयुक्त नहीं है। अतः इस वर्ष आप कोई निवेश न करें।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके जीवनसाथी के साथ समन्ध मधुर होंगे। यदि आप अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो सकता है। आपकी सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

02 जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि आपकी पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगा। आपके माता पिता कास्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरा संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्त के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है परन्तु 31 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आपके मन में सकारात्मक विचार आएं। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी अच्छी रहेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

02 जून के बाद स्वास्थ्य के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से प्रभावित हो सकते हैं। अष्टमस्थ गुरुजल तत्व राशि में होने कारण कफ, पाचनतन्त्र व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान कर सकते हैं परन्तु 31 अक्टूबर के बाद आप के स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए समय अच्छा है।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपकी उच्च शिक्षा में भी रुकावटें आ सकती हैं। बेरोजगार जातकों को अभी कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने स्थान से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरणमनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा। 02 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा करेंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। तीर्थ यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे। 02जूनके बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएँगे।

- सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को जल चढ़ाएं।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा लोहे का तवा दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और वीरवार का व्रत करें।



**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं चतुर्थ भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष द्वितीय भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टम स्थान केगुरु आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। किसी पर अधिक विश्वास करना आप के लिए लाभ प्रद नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

जून के बाद शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में उन्नति मिलना शुरू हो जाएगी। इस समय आप कोई नया कार्य भी प्रारम्भ कर सकते हैं, जिसमें आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप भाग्य की अनुकूलता के कारण उन्नति करेंगे। 3 अक्टूबर के बाद शनि ग्रह का गोचर फिर से प्रतिकूल हो रहा है। उस समय कोई भी निर्णय बहुत सोच विचार कर लेना चाहिए। 26 नवम्बर के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नति होगी। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को हानि हो सकती है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्षका पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान का राहु आपके संचित धन में कमी ला सकते हैं। आय के सारे मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। आपको चोरी आदि से धन हानि भी हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। रोग दूर करने में भी पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरू हो जाएगा। सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियोंको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आप अपने बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी धन खर्च कर सकते हैं। 26 नवम्बर के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति हो सकती है। परिवार या संबंधियों के मांगलिक कार्य व बच्चे की उच्च शिक्षा पर भी आप अधिक खर्च करेंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का पूर्वाब्द अनुकूल नहीं रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पाप ग्रह से प्रभावित होने के कारण आपका घरेलू वातावरण अनुकूल नहीं रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी। परिवार में स्वार्थ की भावना उत्पन्न होगी और इसी स्वार्थ के कारण पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। द्वितीयस्थ राहु के प्रभाव से आपके अंदर वाणी दोष उत्पन्न हो सकता है अतः अच्छा होगा कि इस समय के अंतराल में आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना होगा।

जून के बाद पारिवारिक वातावरण अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। आपको छोटे भाई बहनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके पराक्रम में वृद्धि होगी।

## संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से संतान संबंधित परेशानी बनी रहेंगी। आपके बच्चों की उन्नति में भी व्यवधान आ सकता है, जिससे वे अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाईयों का सामना करेंगे। नवविवाहित व्यक्तियों को संतानोत्पत्ति में विलम्ब हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। उस समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा योग बन रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और शिक्षा के क्षेत्र में कुछ विशेष करेंगे। संतान के लिए विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वाब्द अनुकूल नहीं रहेगा। अष्टमस्थ गुरुके कारण आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से थोड़ी परेशानी हो सकती है। अपने खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित रखें। सुबह सुबह व्यायाम के साथ योगाभ्यास भी करना चाहिए। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

जून के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। उस समय आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह के प्रभाव से आपके मन में अच्छे विचार आएंगे। धार्मिक कृत्यों में रुचि बढ़ेगी जिससे आप मानसिक रूप से संतुष्ट रहेंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्त के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है। विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रुचि बनी रहेगी, साथ ही आलस्य का त्याग करें।

जून से गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या हार्डवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

## यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा हो सकती है। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से घर से दूर की यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वालों का स्थानान्तरण भी हो सकता है।

26 जून के बाद आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा नहीं रहेगा। मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। एकाग्रता नहीं रहने के कारण ध्यान, मन्त्र पाठ इत्यादि क्रियाएं नहीं कर पाएंगे। जून के बाद आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप किसी को गुरु भी बना सकते हैं। उनसे गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पिली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- बुधवार या शनिवार को चिड़ियों को दाना डालें।

## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं द्वितीय भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। 28 फरवरी से भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में सफलता मिलेगी। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। द्वितीयस्थ राहु का नकारात्मक प्रभाव आपके व्यवसाय पर पड़ेगा।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में हो रहा है। मानसिक अशान्ति एवं शारीरिक आलस्यता के कारण आपके कार्यों में कुछ व्यवधान आएंगे। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में आपको विवेक से काम लेना चाहिए।

### धन संपत्ति

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर भी अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा।

फरवरी के बाद पिता से लाभ मिलेगा। बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से शारीरिक व्याधी दूर करने में भी आपके पैसे खर्च होंगे। 24 जुलाई से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा नहीं है। चतुर्थ एवं द्वितीय स्थान पीड़ित होने के कारण घरेलू वातावरण अशान्त बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होते रहेंगे। 23 फरवरी के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। परिवार के कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहेगा। ऐसे में विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए आपको अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

24 जुलाई से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा। माता पिता के लिए यह समय अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु फरवरी के बाद बहुत बढ़िया हो रहा है। शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपकी दूसरी संतान के लिए समय सामान्य रहेगा। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी।

24 जुलाई के बाद सफलता प्राप्ति लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता होगी। आप अपनी मेहनत के बल पर ही लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा परन्तु किंचित मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 28 फरवरी के बाद गुरु की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि के संकेत हैं।

24 मई को राहु ग्रह का गोचर लग्न स्थान पर हो रहा है। उस समय स्वस्थ रहते हुए भी बीमारी जैसा अनुभव होता रहेगा। आलस्य की भावना बनी रहेगी। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा, परन्तु फरवरी के बाद समय उत्तम हो रहा है। व्यावसायिक शिक्षा के लिए समय बहुत बढ़िया चल रहा है। विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

24 जुलाई के बाद प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी और अपने शत्रुओं पीछे छोड़कर आगे बढ़ेंगे

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। फरवरी के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल या उन्नतिकारक भी सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

24 जुलाई के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की जन्मभूमि की यात्रा होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

28 फरवरी से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नानादि से निवृत्त होकर सूर्य को जल दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु लग्न भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु एकादश भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं एकादश भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं दशम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यापारिक सफलता के लिए श्रेष्ठ रहेगा। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ होगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा। 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण आपके कुछ विरोधी उत्पन्न हो सकते हैं परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं।

25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है जिसके फलस्वरूप आप अपने व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आपको कर्मचारियों का पूरा सहयोग मिलेगा। इस सफलता के पीछे आपके भाईयों का सहयोग होगा। व्यापार का स्तर बढ़ाने के लिए अपना संचित धन भी खर्च कर सकते हैं। नौकरी करने वालों के लिए भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा। अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। धनागम के योग प्रबल होंगे तथा आय के नये साधन मिलेंगे।

25 अगस्त के बाद आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। मातुल पक्ष के लोगों से भी लाभ होगा। लग्न स्थान के राहु शारीरिक व्याधि दूर करने में पैसा खर्च करा सकते हैं परन्तु सामान्य काम-काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। छठे स्थान का शनि शत्रुओं से भी लाभ करा सकता है।

### घर-परिवार, समाज

घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे परिवार में खुशहाली का माहौल बनेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलता रहेगा। समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद संतान

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

लग्न स्थान के राहु आपका स्वास्थ्य व पारिवारिक अनुकूलता प्रभावित कर सकते हैं। 25 अगस्त के बाद अपने बौद्धिक बल द्वारा आप अपने घरेलू वातावरण को अनुकूल बना लेंगे। अष्टम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

### संतान

वर्षारम्भ में पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से संतान के लिए उत्तम योग बन रहे हैं। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि सन्तान विवाह योग्य है, तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है।

25 अगस्त से समय फिर से अच्छा हो रहा है। आप सन्तान की शिक्षा में सुधार होगा और उनको उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। 05 अक्टूबर के बाद समय और भी शुभ है।

### स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए सामान्य रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से बीमारी नहीं रहने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव होगा। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने के फलस्वरूप स्वास्थ्य श्रेष्ठ व मन में प्रसन्नता बनी रहेगी।

29 मार्च के बाद द्वादशस्थ गुरु के कारण छोटी-मोटी बीमारियों से परेशानी हो सकती है परन्तु 25 अगस्त से गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल होने के कारण समय बहुत अच्छा हो रहा है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं तथा शीघ्र ही अपने लिए आय के नवीन स्रोतों का भी सृजन करेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ प्रभावित होगा।

25 अगस्त के बाद आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता मिलने के प्रबल योग बन रहे हैं। सभी बेरोजगारों को नौकरी मिल सकती है। सरकारी अफसरों या वरिष्ठ लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

### यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होती रहेंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसायिक यात्रा भी होंगी।

29 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा भी होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

लाभ मिलेगा।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। आपके अंदर ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास बढ़ेगा। आप अपनी पारिवारिक सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा का आयोजन करेंगे जिसमें आपके परिवार वालों का पूर्ण सहयोग होगा।

- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- अपने माता पिता की सेवा करें।
- प्रत्येक दिन दुर्गा कवच या दुर्गा चालीसा का पाठ करें।



**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

## वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि पंचम भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं द्वादश भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आ रहा है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। साल की शुरुआत में आपके कार्यों में देरी हो सकती है जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

आप अपने लक्ष्य को योजनानुसार प्राप्त कर सकेंगे। शनि का गोचर आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी करेगा। आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी और इस ओर ध्यान देना होगा। जो व्यक्ति रोजगार की तलाश में हैं उन्हें अड़चनों के बावजूद सफलता प्राप्त होगी।

### धन संपत्ति

आर्थिक तौर से यह साल आपके लिए कई लाभकारी अवसर लेकर आने वाला है। आपको पहले महीने में प्रतीत नहीं होगा क्योंकि इस दौरान राहु ग्रह का गोचर अच्छा नहीं है। आपको आर्थिक हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपको इस दौरान यही सलाह दी जाती है कि इस समय अपनी वित्तीय योजनाओं को निर्धारित कर आगामी समय के लिए खुद को तैयार रखें। अप्रैल के बाद समय आपके लिए बहुत ही अनुकूल हो रहा है। आप बड़े काम करने में सफल होंगे।

23 सितम्बर के बाद गुरु का गोचर फिर से प्रभावित हो रहा है। उस समय कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः पहले से ही कुछ अतिरिक्त धन का संचय करें। आपकी धर्मपत्नी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है जिसमें भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके दाम्पत्य जीवन में सामान्य उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। पंचम भाव का शनि संतान सुख में कमी कर सकता है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

आपको बड़े भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।

गुरु के गोचर के बाद आपके घरेलू वातावरण में अनुकूलता आएगी। परिवार के सभी लोगों का सहयोग मिलेगा। परिवार में सुख-शान्ति का वातावरण बनेगा। तृतीय स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठि में भी वृद्धि होगी।

### संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। पंचमस्थ शनि आपके बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है जिससे उसकी शिक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

मई के बाद अचानक आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। लग्नस्थ राहु के प्रभाव से स्वास्थ्य संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में दवा से अधिक दुआ आपके लिए लाभप्रद रहेगी। 17 अप्रैल के बाद षष्ठस्थ शनि ग्रह के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी।

23 सितम्बर के बाद द्वादशस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीवर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षा के लिए अच्छा नहीं रहेगा। आलस्य की भावना आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। व्यावसायिक व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा। विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत अच्छा है।

शनि एवं गुरु के गोचर के बाद समय काफी उत्तम हो जाएगा। आप सारे शत्रुओं को परास्त कर अपने करियर में आगे रहेंगे। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। बेरोजगार लोगों को इच्छित नौकरी मिल सकती है।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होंगी। छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छा योग बन रहा है।

**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com

मई के बाद आप ज्यादातर यात्रा पर ही रहेंगे दूर की यात्राएं अधिक होंगी। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। इन सब यात्राओं से आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान-पुण्य करेंगे। मई से आपकी अपने इष्टदेव में भक्ति और प्रगाढ़ होगी। आप अपनी धर्मपत्नी के साथ घरेलू सुख-शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें और काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।



**Pt Rupinder vashishth**

Patel Nagar Yamunanagar

9466043536

rupendersharma1971@gmail.com